आत्मा की श्वास

मुख्य बिंदु

प्रश्न : आप कहते हैं—प्रेम है द्वार प्रभु का। मैंने भी कभी किसी को प्रेम किया था, लेकिन उसे पाने में असफल रहा। अब तो तीस वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन फिर किसी और को प्रेम न कर पाया। ओशो, क्या कभी मेरा उससे मिलन होगा?

पहली तो बात, जिसे मैं प्रेम कहता हूं और जिसे तुम प्रेम कहते हो, वे दोनों एक चीजें नहीं हैं। तुम गलत चीज को प्रेम कह रहे हो। तुम कह रहे हो, 'तीस साल पहले मैंने किसी से कभी प्रेम किया था। उसे पाने में असफल रहा।' अब प्रेम का पाने से क्या संबंध है? मोह का पाने से संबंध है। मोह न पाये तो तड़फता है। प्रेम तो कर लिया और भर गया; पाने की क्या बात है? समझो, एक फूल खिला गुलाब का, तुम पास से निकले, तुम्हारी नजर पड़ी। तुम आनंदित हुए। तुम्हारा प्रेम गुलाब के फूल पर बसा। तुम अपनी राह चले गये। बात आयी-गयी, समाप्त हो गयी। गुलाब, जो तुम्हें दे सकता था, उसने तुम्हें दे दिया; तुम जो गुलाब को दे सकते थे, तुमने दे दिया। नहीं, लेकिन तुम कहते हो : हमें झपट्टा मारकर गुलाब का फूल तोड़ना है। जब तक हम उसको अपने बटन के काज में न लगाएं, तब तक हम तड़फेंगे। तीस साल हो गये तड़फते, कि उस गुलाब के फूल को हम अपने बटन के काज में न लगा पाए। गुलाब का फूल, जैसे ही तुमने कब्जा किया, वैसे ही मर गया।

प्रेम कब्जा नहीं मांगता। और शायद कब्जा मांगने के कारण ही तुम चूके। तुमने शायद कब्जा करना चाहा होगा। अभी भी, तीस साल हो गये, मगर तुम्हारे इरादे अच्छे नहीं हैं। अभी भी तुम कह रहे हो : 'भगवान, क्या कभी मेरा उससे मिलन होगा?' अगर मेरा बस चले तो कभी नहीं होने दूं। तुम खतरनाक हो। तुम किसी की गरदन पर सवार होना चाहते हो। तुम मालिक होना चाहते हो।

प्रेम तो दान है। प्रेम में कोई किसी को रोक ही नहीं सकता। जिससे तुम प्रेम करते हो, वह भी नहीं रोक सकता तुम्हें प्रेम में। कैसे रोक सकता है? प्रेम तो तुम्हारा दान है।

और प्रेम कभी असफल नहीं होता—हो ही नहीं सकता। इसका मतलब यह नहीं है कि प्रेम तुम करोगे तो वह तुम्हें मिल ही जाएगा। उसको मैं सफलता नहीं कहता। प्रेम के तो करने में ही सफलता है। बात ही खत्म हो गयी; और कोई लक्ष्य नहीं है प्रेम में। लेकिन तुम चाहते होओगे कि यह स्त्री मेरी पत्नी बने। तुम सोचते हो यह प्रेम है? तुम कब्जा करना चाहते थे। तुम स्त्री के हाथ में जंजीरें डालना चाहते थे। तुम इस स्त्री को अपने आंगन में कैद करना चाहते थे। तुम इस स्त्री को 'मेरी ही हो, और किसी की न हो', इस तरह की सील-मोहर लगाना चाहते थे। तुम स्वामी बनना चाहते थे। तुम इस स्त्री को संपत्ति बनाना चाहते थे। तुम चाहते थे कि फिर तुम स्त्री को लेकर गांव-बस्ती में घूमो और लोगों को दिखाओ कि 'देखो, यह सुंदर स्त्री, मेरी है! और कोई इसकी तरफ आंख उठाकर न देखे! अन्यथा मुझसे बुरा कोई भी नहीं।'

हिंसा का भाव था तुम्हारा, प्रेम का क्या लेना-देना है? प्रेम तो तुम्हारे भीतर उठी आनंद की ऊर्मी है। किसी के चेहरे को देखकर उठी, बात पूरी हो गयी। किसी की आंखों को देखकर उठी, बात पूरी हो गयी। किसी फूल को खिला देखकर उठी, बात पूरी हो गयी। तुम मालिक क्यों होना चाहो?

तुम प्रेम और लोभ में भेद नहीं समझ पा रहे हो। तुम प्रेम और मोह में भेद नहीं समझ पा रहे हो। तुमने लोभ और मोह को प्रेम समझा है। और ऐसा प्रेम तो असफल

होगा ही। तुम्हें स्त्री नहीं मिली, इसलिए नहीं; मिल जाती तो भी असफल होता। नहीं मिली, इसलिए तीस साल तक सरकता भी रहा; मिल गयी होती तो तीन दिन न चलता।

अक्सर ऐसा हो जाता है कि जिसको तुम पाना चाहते थे और नहीं पा सके, तो तुम्हारा अंहकार तड़फता रहता है, क्योंकि चोट लगी, तुम नहीं पा सके। तुम हार गये। तुम अपनी विजय करके दिखाना चाहते थे और विजय नहीं हो पायी। वह घाव तुम में तड़फता है। यह अहंकार ही है, यह प्रेम नहीं है। पूछते हो : 'आप कहते हैं—प्रेम है द्वार प्रभु का।' मैं कहता नहीं; ऐसा है। प्रेम है द्वार परमात्मा का। और प्रेम के अतिरिक्त उसका कोई और द्वार नहीं है। लेकिन मेरे प्रेम की परिभाषा समझो। प्रेम है दान। प्रेम है विसर्जन। प्रेम है समर्पण।

लेकिन तुम तो परमात्मा को भी अगर प्रेम करोगे तो उसको भी कब्जा कर लेना चाहेंगे; मौका मिल जाए तो उसके गले में रस्सी डालकर तुम अपने अस्तबल में बांध दोगे कि 'चलो अब, मेरे अस्तबल में रहो। मैंने तुम्हें पा लिया।' तुम तो परमात्मा को भी पा लोगे तो उसको भी कैदी बना लोगे। तुम्हारे मन में बड़ी गहन हिंसा है। तुम उस पर भी मुट्ठी बांध लोगे। अगर तुम्हें परमात्मा मिल जाए तो तुम फिर परमात्मा को किसी और को न मिलने दोगे; फिर तुम पूरी चेष्टा करोगे कि अब देखना, किसी और पर कृपा मत कर देना! अब तुम्हारी सारी अनुकंपा मेरी तरफ है। मैं तुम्हारा भक्त, तुम मेरे भगवान! अब इधर-उधर मत जाना! अब और दूसरे चिल्लाते हैं, चिल्लाने दो। न मैं तुम्हें धोखा दूंगा, न तुम मुझे धोखा देना। न मैं किसी और को भगवान बनाऊंगा, न तुम किसी और को भक्त बनाना।

तुम्हारा यह जो रुग्ण चित्त है, यह सभी चीजों को रुग्ण कर देता है।

जापान में एक कहानी है। एक बौद्ध साध्वी थी। उसके पास बड़े प्यारे बुद्ध की प्रतिमा थी। स्फटिक की बनी थी। और वह रोज बुद्ध की प्रार्थना करती सुबह-सांझ, आरती उतारती, दीया जलती, ऊदबत्ती लगाती। साध्वी थी तो अक्सर मंदिरों में ठहरती। यात्रा पर जाती। एक बार मंदिर में ठहरी। हजार बुद्धों का मंदिर, जहां हजार प्रतिमाएं हैं बुद्ध की। उसने सुबह अपने छोटे-से बुद्ध को निकाला। ये हजार इतनी बड़ी प्रतिमाएं हैं सारी, बड़ी विराट प्रतिमाएं हैं, जिन्हें देखने हजारों मील से लोग आते हैं। लेकिन जब वह सुबह पूजा करने बैठी तो उसने अपनी झोली में से अपने बुद्ध निकाले। अपने-अपने बुद्ध सब सम्हाल कर रखते हैं। ऐसे उधार बुद्ध और हर किसी के बुद्ध और ऐरे-गैरे नत्थु-खैरे जिनकी प्रार्थना करते हैं...। लोग अपने अपने विशिष्ट बुद्ध रखते हैं, अपनी थैली में रखते हैं, सम्हालकर रखते हैं। अपने बुद्ध को निकाला, बिठाया आसन पर। छोटा-सा आसन भी रखती थी।

तब उसे एक सवाल उठा कि आज अगर मैंने ऊदबत्ती लगायी तो ऊदबत्ती के धुएं पर किसका क्या बस! धुआं तो धुआं है। धुआं कोई आदमी तो नहीं है। आदमी जैसी बुद्धि भी धुएं के पास नहीं है। धुआं तो उड़ेगा और ये तो हजार बुद्धों की प्रतिमाएं हैं, न मालूम किसके नासापुटों में समा जाए। धुआं तो धुआं है, धुएं का क्या भरोसा! तो उसने एक छोटी-सी पोंगरी बनायी—बांस की पोंगरी। ऊदबत्ती लगायी और बांस की पोंगरी में से धुएं को अपने बुद्ध तक पहुंचाया। उसने जो किया, सो ठीक, मगर हुआ यह कि बुद्ध का चेहरा काला हो गया। वह बड़ी दुखी हुई। यह प्यारी-प्यारी प्रतिमा खराब हो गई।

मंदिर का बड़ा पुजारी यह सब खड़ा देखता था। वह एक पहुंचा हुआ फकीर था। उसने कहा कि तेरी बात मैं समझ पाया। यह तेरा देख रहा हूं खेल। मगर देख, तेरे साथ बुद्ध की क्या गति हो गयी! तू तो मुक्त न हुई बुद्ध को पाकर, बुद्ध तेरे कैदी हो गये। तू तो बुद्ध को पाकर सुंदर न हुई, बुद्ध कुरूप हो गये। जरा देख बुद्ध को क्या हुआ। तूने चेहरा काला कर दिया। ऐसी भी क्या बात? ऐसा भी क्या लोभ, मोह? ऐसा भी क्या बंधन?

मगर यही है हालत। अपने-अपने भगवान है। अपने-अपने मंदिर हैं। तुमने प्रेम को समझा ही नहीं। प्रेम विस्तीर्ण है। प्रेम कोई सीमा नहीं मानता और न कोई सीमा जानता है। प्रेम कुछ मांगता नहीं उत्तर में। प्रेम कोई प्रत्युत्तर नहीं चाहता। प्रेम तो इसी से धन्यभागी अनुभव करता है कि मैं प्रेम को कर पाया।

अब तुम चांद को प्रेम करते हो, तो तुम चांद को अपने घर बांध नहीं रखना चाहते। छोटे बच्चे अक्सर हाथ बढ़ाते हैं चांद को पकड़ने के लिए। छोटे बच्चे अक्सर परेशानी खड़ी कर देते हैं। तुमने कृष्ण और यशोदा की कहानी भी पढ़ी होगी कि कृष्ण मचल गये कि चांद चाहिए। अब यशोदा परेशान है कि क्या करे, क्या न करे। एक साधु गुजरता है और वह साधु यह सब देखता है। वह कहता है : एक काम कर। कांसे की थाली में पानी भरकर रख। चांद उसमें दिखायी पड़ेगा। वही चांद कृष्ण को दे-दे।

उसने कांसे की थाली में पानी भरा, चांद का प्रतिबिंब पड़ा। यह छोटा-सा बालकृष्ण खूब आनंदित हो गया। थाली लेकर घूमने लगा। जहां ले जाए, चांद तो वही, चांद की छाया पड़ रही है। बहुत खुश है, प्रसन्न हो गया, तृप्त हो गया।

ध्यान रखना, अगर तुमने प्रेम-पात्र पर मालकियत करनी चाही, तो प्रतिबिंब पर ही मालकियत होगी। यह कहानी का राज है। असली पर नहीं हो सकती। असली चूक जाएगा। नकली पर हो जाएगी मालकियत। नकली पर ही मालकियत हो सकती है। नकली ही मुट्ठी में आता है, असली मुट्ठी में नहीं आता। अगर असली चाहिए हो तो मुट्ठी खुली रखना, बांधना मत। नकली चाहिए हो तो मुट्ठी बांध लेना। असली के लिए खुला हाथ चाहिए, खुला हृदय चाहिए। नकली के लिए बांध सकते हो। प्रतिबिंब पकड़ में आ सकते हैं, मूल पकड़ में नहीं आता।

और हम सारे जीवन यही उपद्रव में लगे हैं कि किसी तरह पकड़ में आ जाए; बांध लें, रेखा खींच दे उसके चारों तरफ; कब्जे में कर लें। यह कब्जे की आकांक्षा रुग्ण है।

पूछते हो : 'आप कहते हैं—प्रेम है द्वार प्रभु का। मैंने भी कभी किसी को प्रेम किया था। लेकिन उसे पाने में असफल रहा।' पाने की आकांक्षा थी, इसी में असफलता है। अगर सिर्फ प्रेम किया होता तो सफलता ही सफलता थी। ,

पाना क्यों चाहो? मालकियत क्यों? मालिक तो सिर्फ एक परमात्मा है, तुम क्यों मालिक बनना चाहो? सुंदर फूल उसके, सुंदर पहाड़ उसके, सुंदर चेहरे उसके, सुंदर देहें उसकी, सुंदर नदियां उसकी, सुंदर चांद-तारे उसके—सारा सौंदर्य उसका है। तुम कब्जा क्यों करना चाहो? और तीस साल बीत गये, अभी भी तुम्हारी कब्जे की आकांक्षा है?

'लेकिन मैं फिर किसी और को प्रेम न कर पाया।'

तुम सोचते हो तुमने बड़ा भारी काम किया, कोई शहीद हो गये! सोच रहे होओगे : शहीदों की चिंताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले! क्या विचार कर रहे हो? यह भी कोई प्रेम हुआ, जो एक पर चुक गया? बूंद-बूंद रहा होगा, एकाध ही बूंद रहा होगा कि टपका कि खत्म। फिर झरना ही सूख गया? इतना विराट संसार। प्रभु इतने रूपों में प्रगट! और तुम एक रूप में ही ऐसे भटक गये कि फिर तुम किसी और को प्रेम न कर पाए। तुम सोचते होओगे कि यह बड़ा मैंने प्रेम किया, कि देखो, वह तो नहीं मिली, लेकिन मैं अब भी उसी का हूं। फिर किसी को प्रेम नहीं किया!

तुम अपने को नाहक सता रहे हो। तुम अपने को नाहक कष्ट दे रहे हो। यह भी अहंकार है। उस प्रेम में भी अहंकार था कि पाकर रहूंगा। फिर पा नहीं सके तो विषाद ने घेर लिया। अब तुम यह कहते हो : तो दिखाकर रहूंगा कि मैं वफादार हूं! किसको दिखा रहे हो? तुम्हारा जीवन चुकता हुआ जा रहा है।

अगर परमात्मा एक द्वार से नहीं मिला, दूसरे द्वार से खोजते।

एक मेरे मित्र है। उनकी पत्नी मर गयी। जब पत्नी जिंदा थी, तब भी मैं उन्हें जानता था, कभी उनमें बनी नहीं। किसमें बनती है! पति-पत्नी में बन जाए, यह चमत्कार। ऐसा होता नहीं। कभी हो जाए तो अपवाद। और अपवाद से सिर्फ नियम सिद्ध होता है, और कुछ सिद्ध नहीं होता। उन्हें जानता था। जब भी मेरे पास आते थे, उनकी पत्नी आती थी, तो सदा रोना और झंझट यही थी, दोनों की बनती नहीं थी। फिर पत्नी मर गयी, पत्नी मर गयी तो मुझे खबर मिली कि वे तो एकदम विरागी हो गये। पत्नी क्या मर गयी, उनका प्रेम एकदम से पत्नी के प्रति हो गया! उन्होंने सब तरफ दीवालों में फोटुएं लगा लीं पत्नी की। दुकान इत्यादि जाना ही बंद कर दिया। पैसे वाले हैं, सुविधा है, चाहे तो इस तरह की शहीदगी का मजा ले सकते हैं, कोई अड़चन नहीं है। वे तो बैठ ही गये, वे जाएं ही नहीं वहां से, अपने कमरे में ही बैठे हैं धूनी रमाए। उनकी बहन ने मुझे आकर कहा कि मेरे भाई को क्या हो गया, अब आप कुछ फिकर करें! मरे उनकी पत्नी को तीन महीने हो गये, वे वहीं बैठे हैं धूनी रमाए। गजब का प्रेम, उनकी बहन ने कहा है। ऐसा प्रेम सतयुग में होता था, कलियुग में कहां।

मैंने उनसे कहा कि प्रेम-व्रेम कुछ नहीं, मैं आता हूं। मैं उनके घर गया। मैंने कहा : यह क्या कर रहे हैं, किसकी तस्वीरें लटकाये हुए हो? और मैं भलीभांति जानता हूं तुम्हारी कभी बनी नहीं। अब अपराध-भाव से पीड़ित हो या क्या मामला है—कि इसको कभी सुख नहीं दिया, इसको सदा सताया! तो अब कुछ क्षति-पूर्ति कर रहे हो? जिंदा थी तो तुमने जरूर कई बार सोचा होगा कि मर जाए। कौन पति नहीं सोचता। सरका देता है विचार को कि नहीं-नहीं, यह बात ठीक नहीं। और उस दिन जिस दिन यह विचार आता है, कुल्फी खरीद लाता है बाजार से, साड़ी ले आता है कि नहीं, यह विचार आ गया, ठीक नहीं। अब इसकी क्षति-पूर्ति करनी पड़ती है न! स्त्रियां जानती हैं, जिस दिन पति साड़ी ले आए बिना कहे, उसका मतलब है कुछ मतलब है कुछ गड़बड़ है; मिठाई ले आए, उसका मतलब है कुछ गड़बड़ है। न दिवाली न होली—और ये मिठाई लिये चले आ रहे हैं! तो जरूर कोई

मालिक तो सिर्फ एक परमात्मा है, तुम क्यों मालिक बनना चाहो? सुंदर फूल उसके, सुंदर पहाड़ उसके, सुंदर चेहरे उसके, सुंदर देहें उसकी, सुंदर नदियां उसकी, सुंदर चांद-तारे उसके-सारा सौंदर्य उसका है। तुम कब्जा क्यों करना चाहो?

अपराध किया है। फिर स्त्री खोजबीन में लग जाती है और जेब वगैरह तलाशती है, डायरी वगैरह देखती है कि कहीं फोन नंबर मिल जाए, कोई नाम का पता चल जाए। कुछ न कुछ है मामला!

तो मैंने कहा कि तुमने जरूर कई दफे सोचा होगा कि यह मर जाए। वे थोड़ चौंके। उन्होंने कहा कि यह आपको कैसे पता चला?

मैंने कहा : पता की बात ही क्या, ये फोटू क्यों लगाई है? यह यहां बैठकर क्या धूनी रमाए हुए हो? यह किसको दिखा रहे हो? इससे सार क्या है?

मैंने कहा : मुझसे तो कहो सब, अभी यहां कोई भी नहीं है। उसकी आंख में आंसू आ गये। उन्होंने कहा : आपने मुझे पकड़ लिया। मामला यही है। मैने कई बार सोचा कि यह मर जाए। इतना ही नहीं, कई दफा मैंने सोचा कि मार डालूं, क्योंकि दुख ही दुख है। और फिर वह मर गई तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरी ही भावनाओं ने उसे मार डाला। मगर आप किसी और को मत कह देना। लोग तो यही समझ रहे हैं कि मैं उसके प्रेम में दीवाना हूं, अब कभी

विवाह न करूंगा। मैंने उनसे कहा कि अगर इस स्त्री को तुमने प्रेम किया था और इस स्त्री के प्रेम से तुमने आनंद पाया था तो तुम निश्चित विवाह करोगे। क्योंकि प्रेम ने तुम्हें आनंद दिया, आनंद तुम क्यों न चाहोगे! अक्सर जो लोग एक विवाह के बाद विवाह नहीं करते, वे वे लोग हैं जिनको इतना स्त्री कष्ट दे गयी कि सब स्त्रियों से मुक्त कर गयी, सदा के लिए मुक्त कर गयी। अब झंझट में वे नहीं पड़ सकते। एक को क्या जाना, सब को जान लिया। हालांकि ऐसा वे कहेंगे नहीं। मगर मनावैज्ञानिक सत्य बड़े उलटे हैं। आदमी जो ऊपर करता है, वह एक बात; भीतर जो होती है, बिलकुल दूसरी बात!

अब तुम कहते हो : 'तीस साल बीत चुके, मैं किसी को प्रेम न कर पाया।' तुम्हारे अहंकार को जो चोट लगी है, उस चोट के कारण तुम अब एक नया अहंकार खड़ा कर रहे हो कि मैं कोई ऐसा-वैसा प्रेमी नहीं हूं। मैं दिखाकर रहूंगा कि किया तो एक को किया, फिर कभी नहीं किया! बस एक पर कुर्बान हो गया। अपनी जिंदगी की आहुति चढ़ा दूंगा।

यह रुग्ण चित्त-दशा है। यह दुखवादी दशा है। जिसको मनोवैज्ञानिक मैसोचिज़्म कहते हैं, यह अपने को सताने की वृत्ति है। तुम पुराने ढंग के संन्यासी हो सकते हो—बड़ी आसानी से। तुम चाहो तो कांटों वगैरह की सेज बनाकर लेट सकते हो, धूप में खड़े हो सकते हो, उपवास कर सकते हो—बड़ी आसानी से। तुम्हें बिलकुल जम जाएंगी ये बातें।

प्रेम तो जीवन की भाव-भंगिमा है। प्रेम जीवन है। प्रेम कोई ऐसी चीज नहीं कि एक पर चुक गया। प्रेम तो श्वास है आत्मा की। तुम रोक कैसे सकोगे? जैसे शरीर के लिए श्वास की जरूरत है, ऐसे ही आत्मा के जीवन के लिए प्रेम की जरूरत है। प्रेम तो सतत हो रहा है—कभी वृक्ष से, कभी चांद से, कभी तारों से, कभी लोगों से, कभी कविताओं से, कभी संगीत से, कभी चित्रों से, कभी मूर्तियों से। प्रेम तो प्रतिपल हो रहा है। प्रेम कोई ऐसी चीज थोड़े ही है कि तुम एक तरफ कर लिए कि बस खतम हुआ। अब तुम मेरे पास हो तो मुझ से तुम्हारा प्रेम हो रहा है; नहीं तो यहां किसलिए हो? यह भी प्रेम है। अगर मेरी वाणी तुम्हें प्रीतिकर लग रही है तो यह भी प्रेम है।

प्रेम के अनंत रूप है। कोई एक स्त्री पर थोड़े ही चुक जाता है। कोई किसी एक पुरुष पर थोड़े ही चुक जाता है। तुम्हारा कोई मित्र भी होगा; वह भी प्रेम है। प्रेम के बहुत-बहुत भाव, बहुत भंगिमाएं है। और सभी भंगिमाओं में प्रेम को प्रगट होना चाहिए। और प्रेम की अंतिम भंगिमा परमात्मा है।

जब तुम्हारा प्रेम सब तरफ बहने लगता है, निर्बाध बहने लगता है, बेशर्त बहने लगता है, जब तुम्हारे प्रेम में कोई मांग नहीं रह जाती, सिर्फ दान रह जाता है—तो प्रेम प्रार्थना हो जाता है। इसलिए मैं कहता हूं : प्रेम परमात्मा का द्वार है।

मगर तुम पूछते हो : 'ओशो, क्या कभी मेरा उससे मिलन होगा?' महाराज बख्शो! किसी तरह बेचारी बच गयी। तुम कुछ और काम करो। तुम क्या अगले जन्म की प्रतीक्षा कर रहे हो?

प्रेम असफल होता ही नहीं

कल मैं एक कविता पढ़ रहा था, तुम्हारे काम की होगी।

उनकी तस्वीर निगाहों में चमक उठी है
आंसुओ! आज तो दम भर के लिए थम जाओ
जाने ये कौन बरस, कौन सदी है कि यहां
मेरी नाकाम सदाओं के भटकते आसेब
अपनी ही खोज में आवारा-ओ-दरमांदा है
मुझ को जाना था किधर और मैं आया हूं कहां?
अपने जख्मों को लिए कितने नगर घूमा हूं
ले के सामने-सफर दुखते हुए शानों पर
हाथ पकड़े हुए वहशत-जदा अरमानों का
अजनबी वादियों, दरियाओं में आ पहुंचा हूं
हसरतो-गम की तपिश-रेज गुजर राहों पर
मेरे रिसते हुए छालों के निशां मिलते हैं
जीस्त दम भर को जहां बैठ के सुस्ताती थी
अब वो पीपल के घने साये कहां मिलते हैं
वक्त दम साधे हुए कांप रहा है कि अभी
जिंदगी अपनी कमींगह से निकल आएगी।
और ठोकर उसे मारेगी कि—'चल, आगे बढ़!'
इसके पहले कि मिले वक्त को हुक्मे-रत्फार
मेरा खोया हुआ चेहरा मुझे वापस दे दो
अपने लब रख के मैं उन ओठों पे सो जाऊंगा
जिनको चूमे हुए कितने ही बरस बीत गए
रूह में सुर्खिये-लब घुल के उतर जाएगी
पांव उठेंगे उसी शहर की जानिब, कि जहां
कल्ब ने मेरे, धड़क उठने का फन सीखा था
दम बखुद वक्त मुझे देख के पूछेगा—
'क्या तेरे शौक की वारफ्ता—मिजाजी है वहीं?'
अपने उलझे हुए बालो की लटें बिखराये
कौन ये गोद में बच्चे को लिए बैठी है
अपने घर-बार, दरोबाम से उकताई हुई
—किसलिए आए हैं? क्यों घर में घुसे आते हैं?
जाइये-जाइये, आफिस से वो आते होंगे
अजनबी शख्स को देखेंगे तो घबराएंगे
जाने क्या सोचेंगे, कुछ सोच के झुंझलाएंगे
कौन वो? कौन ये बच्चा? ये थका-सा चेहरा?
कौन मैं, अपने ही पैकर का झिझकता साया
वक्त एहसासे खिजालत से झुकाए हुए सर
अपनी खामोश निगाहों से ये करता है सवाल

'क्या तेरे शौक की वारत्फा मिजाजी है वही?'

यह कवि कह रहा है कि वर्षों बीत गये हैं, जिसको प्रेम किया था और जिसके प्रेम के कारण जीवन में उत्साह उठा था, वह उत्साह खो गया। अब वर्षों से तो मैं एक भूत की तरह उसी को खोजते भटक रहा हूं। और इसके पहले कि समय मुझ से कहे कि उठ, आगे बढ़, मैं एक ही प्रार्थना करता हूं कि मुझे मेरा पुराना वह प्यारा चेहरा वापिस दे दो। मैं उन्हीं ओंठों पर ओंठ रखकर सो जाऊंगा।

मेरा खोया हुआ चेहरा मुझे वापिस दे दो
अपने लब रख के मैं उन ओठों पे सो जाऊंगा
जिनको चूमे हुए कितने बरस बीत गए
रूह में सुर्खिये-लब घुल के उतर जाएगी
सुबह अनफास की निकहत में बस जाएगी

—मेरी श्वासें सुगंधित हो जाएंगी। ओंठों की सुर्खी मेरे प्राणों को फिर से जगा देगी।

पांव उठेंगे उसी शहर की जानिब, कि जहां
कल्ब ने मेरे, धड़क उठने का फन सीखा था

वह क्षण, वह प्रेम का क्षण, जहां मेरे हृदय ने धड़क उठने का राज़ सीखा था, उसी तरफ भागने लगूंगा।

दम बखुद वक्त मुझे देख के पूछेगा

और समय मुझ से जरूर पूछेगा—

'क्या तेरे शौक की वारत्फा-मिजाजी है वहीं?'

क्या तेरे प्रेम का, तेरे लगाव का, तेरी वासना का, अभी भी वही मनमौजीपन है जो पहले था? अभी भी तू जागा नहीं? अभी भी तू समझा नहीं?

अपने उलझे हुए बालों की लटें बिखराये

और अगर मैं पहुंच जाऊं फिर से, तो यह होगी हालत...तुम्हारी भी यह हालत होगी। अब तीस साल बाद अगर तुम्हें मिल जाए वह स्त्री जिसको तुम सोचते हो तुमने प्रेम किया था और तुम उसके पास घर में पहुंच जाओ... अपने उलझे हुए बालों की लटें बिखराए! वह भी पचास की होती होगी। तुम अभी भी सोचते हो, वह बीस की है!

कौन ये गोद में बच्चे को लिए बैठी है?

मिल जाएगी तो पहचान भी न सकोगे।

कौन ये गोद में बच्चे को लिए बैठी है?
अपने घर-बार दरोबाम में उकताई हुई

सब तरह से ऊबी, परेशान, बालों को बिखराए, यह कौन बच्चे को लिए बैठी है! यह चेहरा तुम्हें पहचानने में भी नहीं आएगा। यह चेहरा वही नहीं है, जो तीस साल पहले था। नहीं हो सकता। अपना चेहरा तो आईने में देखो! तुम भी कितने बदल गये! तुम भी वही नहीं हो। वह भी वही नहीं हो सकती। तुम्हें देखेगी तो घबड़ाएगी। तुम यह मत सोचना कि पहचानेगी। पूछेगी :

किसलिए आए हैं? क्यों घर में घुसे आते हैं?
जाइये-जाइये, आफिस से वो आते होंगे
अजनबी शख्स को देखेंगे तो घबराएंगे
जाने क्या सोचेंगे, कुछ सोच के झुंझलाएंगे।

—आप कहां घुसे चले आ रहे हैं? तुम्हें पहचान भी न सकेगी। तुम भी न पहचान सकोगे। कौन वो! कौन यह बच्चा! यह थका-सा चेहरा! किसकी बातें कर रही है यह स्त्री? कौन वो? कौन हैं जो दफ्तर से आते होंगे? कौन यह बच्चा? यह थका-सा चेहरा! और तब तुम्हें ख्याल उठेगा :

कौन मैं? अपने ही पैकर का झिझकता साया

—सिर्फ एक छाया मात्र हूं अतीत की!

वक्त एहसासे खिजालत से झुकाये हुए सर

और समय लज्जा से सर झुकाकर पूछेगा—

अपनी खामोश निगाहों से यह करता है सवाल
'क्या तेरे शौक की वारत्फा मिजाजी है वही?'

क्या अब भी तेरे प्रेम का पागलपन वही है? अब भी तू समझा नहीं? प्रौढ़ नहीं हुआ? तीस साल लम्बा समय है। इन तीस सालों में तुम उसी सपने को संजोये बैठे हो, तो तुमने तीस साल गंवा दिये, तो तुमने जिंदगी से कुछ सीखा नहीं। और अभी तीस साल के बाद भी वही बचकानी बात तुम्हारे मन में घूम रही है कि भगवान, क्या कभी मेरा उससे मिलन होगा? तुम अब भी सपने और ख्वाब में जी रहे हो। ख्वाब से जागो! काफी समय बीत गया। आगे जो आ रहा है, संभावना बहुत कम है कि उससे तुम्हारा मिलना हो; क्योंकि जिससे तुम मिलना चाहते हो वह अब है कहां? गंगा का कितना पानी बह गया! जो तुम अपनी आंखों में सजाये बैठे हो तस्वीर, वह तस्वीर अब कभी नहीं मिलेगी। वह तो पानी पर खिंची लकीर थी, कब की मिट गई है! और जो मिलगी, उससे तुम्हारा कोई तालमेल न बैठेगा। तुम सोच भी न पाओगे कि

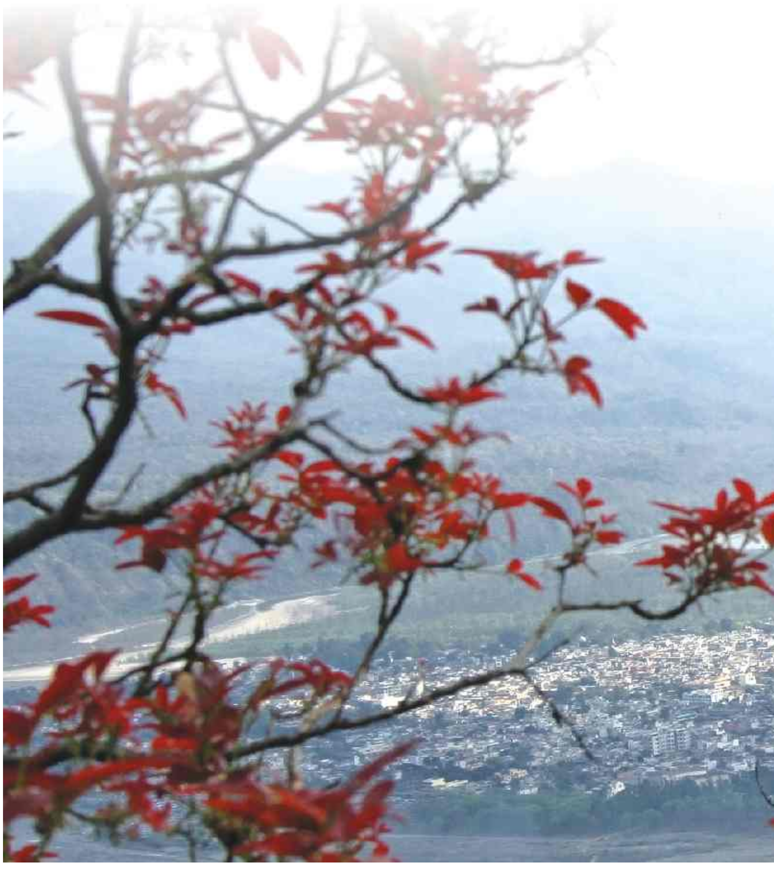

यह स्त्री इस तरह हो गई। तुम पहचान भी न पाओगे। आने वाली जो घटना है, वह है मौत, जो पास आ रही है रोज। तुम अतीत में मत उलझे रहो। जरा जागो स्थिति के प्रति। जिंदगी हाथ से जा रही है। मौत करीब आ रही है। इसके पहले कि मौत आ जाए—पको! प्रौढ़ बनो! ये बचकानी बातें हैं। ये कवियों को शोभा देती हैं। कवियों को माफ किया जा सकता है। बुद्धिमानों को ये बातें शोभा नहीं देतीं। थोड़ी बुद्धि पर रौनक लाओ, थोड़ी बुद्धि को निखारो। थोड़ा जीवन को साफ करके देखो। मिल भी जाती तो क्या होता? किसी को तो मिल ही गयी होगी। जरा उनसे पूछो, उनको क्या हुआ?

मैंने सुना है, एक पागलखाने में दो आदमी बंद हैं। और एक दर्शक देखने आया है। वह पूछता है : यह आदमी क्या कर रहा है? क्योंकि यह आदमी एक तस्वीर लिए बैठा है, जैसे तुम तस्वीर लिए बैठे हो। तस्वीर लिए बैठा है, छाती से लगा रहा है, चूमता है, छाती से लगाता है। आंसू बह रहे हैं, रो रहा है। वह पूछता है : इसको क्या हो गया? तो सुप्रिन्टेन्डेन्ट कहता है : यह आदमी इस स्त्री को प्रेम करता था, उसे पा नहीं सका, उसी में पागल हो गया।

और सामने ही कोठरी में एक दूसरा आदमी दहाड़ें मार रहा है और दीवालों से सिर फोड़ रहा है। और वह पूछता है : इस सज्जन को क्या हुआ? और वह सुप्रिन्टेन्डेन्ट कहता है : इन सज्जन को वह स्त्री मिल गयी, जिससे वह पहला प्रेम करता था। मिलने के कारण ये पागल हो गये हैं।

चारों तरफ देखो। जो प्रेम में सफल हो गये हैं, उनको देखो; जो असफल हो गये हैं, उनको देखो-सब रो रहे हैं! यह प्रेम प्रेम नहीं है। मैं किसी और प्रेम की बात कर रहा हूं। मैं उस प्रेम की बात कर रहा हूं, जिसमें असफलता होती ही नहीं

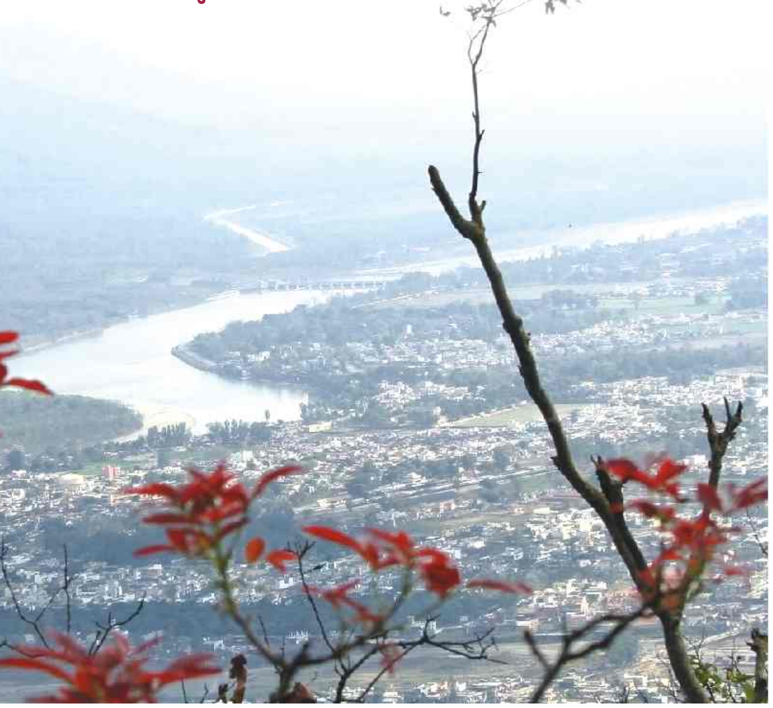

तुम बच गये, भगवान को धन्यवाद दो! कोई दूसरा तुम्हारा कष्ट भोगता होगा। इस जिंदगी में मिलता क्या है? यहां मिलने को है क्या? राख ही राख है। मिल जाए, इतनी-सी बात, तो बस बहुत है कि यहां कुछ भी मिलने को नहीं। बस यही सार है। इतनी बात समझ में आ जाए कि यहां कुछ भी नहीं। इस बोध से ही आदमी परमात्मा की तरफ उठना शुरू होता है। जहां संसार का प्रेम असफल होता है, वहीं परमात्मा का प्रेम जगता है।

अब तुम उस स्त्री की प्रतीक्षा न करो। अब तुम उस प्रेम की भी प्रतीक्षा न करो। वह जवानी का सपना था। जवानी सपने देखती है। गया! अब तुम बूढ़े होने के करीब आए। अब तुम जरा जागो! अब यह जिंदगी हाथ से निकली जाती है। इसके पहले कि यह जिंदगी हाथ से निकल जाए, कुछ तैयारी करो—मौत से मिलने की कुछ तैयारी करो। और एक ही व्यक्ति मौत से मिलने में तैयार हो पाता है, जो जाग जाए, जो होश से भर जाए, जो जिंदगी की असारता देख ले।

इस जिंदगी की असारता में परमात्मा का सार है। यह दिख गया कि सब असार है, तो वह दिखना शुरू हो जाता है, जो सार है। असार को असार की तरह जान लेना, सार की तरफ जाने का पहला कदम है।

अब तुम असार में मत उलझे रहो। ऐसे भी बहुत समय गंवा दिया। तीस साल में तो परमात्मा को पा लेते। इतनी प्यास से तो परमात्मा मिल जाता। इतनी प्यास को ढालते तो प्रार्थना मिल जाती। तुम कूड़ा-कर्कट पाने के लिए इतने दीवाने हो रहे हो? मूल्य कितना है?

चारों तरफ देखो। जो प्रेम में सफल हो गये हैं, उनको देखो; जो असफल हो गये हैं, उनको देखो—सब रो रहे हैं! यह प्रेम प्रेम नहीं है। मैं किसी और प्रेम की बात कर रहा हूं। मैं उस प्रेम की बात कर रहा हूं, जिसमें असफलता होती ही नहीं।

परमात्मा से प्रेम जुड़ाओ, वहां कभी असफलता नहीं है। और वही मिलता है जिसकी तुम तलाश कर रहे हो। जब तुम साधारण जीवन के प्रेम में भी पड़ते हो, तब भी तुम परमात्मा को ही खोज रहे हो; इसलिए साधारण प्रेम तुम्हें तृप्त नहीं कर सकता, क्योंकि खोज बड़े की है और साधारण बिलकुल साधारण है। तुम कंकड़ पत्थरों में हीरे खोज रहे हो, नहीं मिलेंगे। खोज परमात्मा की चल रही है, परम प्यारे की चल रही है। उसे खोजो! वहां कोई कभी असफल नहीं होता है।

संसार में कोई कभी सफल नहीं होता; परमात्मा में कोई कभी असफल नहीं होता है।

— ओशो

पद घुंघरू बांध

बीसवां प्रवचन, चौथा प्रश्न

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)